श्री हनुमान चालीसा

सकटमोचन ❀ बजरग बाण ❀ आरती आदि

तेजकुमार बुकडिपो (प्रा०) लिमिटेड १, त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ

मूल्य ३)

॥ श्री हनुमते नमः ॥

दोहा

श्रीगुरु चरण सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ❀ जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ।
राम दूत अतुलित बल धामा ❀ अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी ❀ कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा ❀ कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
हाथ वज्र औ ध्वजा बिराजै ❀ काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
शंकर सुवन केसरीनंदन ❀ तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
विद्यावान गुनी अति चातुर ❀ राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया ❀ राम लषन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ❀ बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर संहारे ❀ रामचन्द्र के काज सँवारे ॥

लाय सजीवन लषन जियाये ❀ श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई ❀ तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ❀ अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ❀ नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ❀ कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ❀ राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना ❀ लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू ❀ लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ❀ जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते ❀ सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥
राम दुआरे तुम रखवारे ❀ होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ❀ तुम रच्छक काहू को डर ना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै ❀ तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै ❀ महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा ❀ जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै ❀ मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा ❀ तिन के काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोइ लावै ❀ सोइ अमित जीवन फल पावै ॥
चारौं जुग परताप तुम्हारा ❀ है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे ❀ असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ❀ अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा ❀ सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै ❀ जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई ❀ जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई ❀ हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा ❀ जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाइं ❀ कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ॥
जो सत बार पाठ कर कोई ❀ छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ❀ होय सिद्धि, साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा ❀ कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

卐 दोहा 卐

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लषन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

॥ इति श्री हनुमान चालीसा सम्पूर्ण ॥

संकटमोचन हनुमानाष्टक

मत्तगयन्द छन्द

बाल समय रबि भक्षि लियो तब, तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सो जात न टारो॥
देवन आनि करी बिनती तब, छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो॥१॥
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महामुनि साप दियो तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो॥
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास केसोक निवारो॥को०२॥
अंगद के सँग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।

जीवत ना बचिहौ हम सों जु, बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ॥
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय, सिया-सुधि प्राण उबारो ॥को० ३॥
रावन त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो ॥
चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो॥को० ४॥
बान लग्यो उर लक्षिमन के तब, प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह वैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ॥
आनि सँजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो॥को० ५॥
रावन जुद्ध अजान कियो तब, नाग कि फाँस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो ॥
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो ॥को० ६॥

बंधु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सो बलि, देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ॥
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत सँहारो॥को०७॥
काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसो नहिं जात है टारो ॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो॥को०८॥

दो०—लालदेह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर ।
वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ॥

॥ इति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ॥

—:०:—

श्री हनुमत्-स्तवन

सो०— प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामाग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं, रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् ।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः, शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां, नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥

श्री हनुमानजी की आरती

आरती कीजे हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥टेक॥
जाके बल से गिरवर काँपै । रोग दोष जाके निकट न झाँपै ॥ १ ॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई । संतन के प्रभु सदा सहाई ॥ २ ॥
दै बीरा रघुनाथ पठाये । लंका जारि सीय सुधि लाये ॥ ३ ॥

लंका सो कोट समुद्र सी खाई । जात पवनसुत वार न लाई ॥ ४ ॥
लंका जारि असुर संहारे । सियारामजी के काज सँवारे ॥ ५ ॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे । आनि सजीवन प्राण उबारे ॥ ६ ॥
पैठि पाताल तोरि जम - कारे । अहिरावन की भुजा उखारे ॥ ७ ॥
बाँये भुजा असुर दल मारे । दहिने भुजा संतजन तारे ॥ ८ ॥
सुर नर मुनि आरती उतारे । जै जै जै हनुमान उचारे ॥ ९ ॥
कंचन थार कपूर लौं छाई । आरति करत अंजना माई ॥ १० ॥
जो हनुमान जी की आरती गावै । बसि बैकुण्ठ परमपद पावै ॥ ११ ॥

॥ श्रीराम वन्दना ॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् । लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे । रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

श्रीराम-स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ।
नवकंज-लोचन, कंज, मुख, कर-कंज, पद कंजारुणं ॥
कंदर्प अगणित अमित छबि नवनील-नीरद सुंदरं ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव - दैत्यवंश - निकंदनं ।
रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथ - नंदनं ॥
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं ।
आजानुभुज शर - चाप धर, संग्राम - जित - खरदूषणं ॥
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष - मुनि - मन । रंजनं ।
मम हृदय-कंज निवास कुरु कामादि खल-दल गंजन ॥
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो ।
करुना निधान सुजान सीलु सनेह जानत रावरो ॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषीं अली ।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥
सो०—जानि गौरि अनुकूल सियहिय हरषु न जाइ कहि ।
मन्जुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

॥ सियावर रामचन्द्र की जय ॥

बजरंग – बाण

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करै सनमान।
तेहि के कारज सकल सुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥
जय हनुमन्त सन्त हितकारी, सुनि लीजै प्रभु बिनय हमारी।
जन के काज बिलम्ब न कीजै, आतुर दौरि महासुख दीजै।
जैसे कूदि सिन्धु के पारा, सुरसा बदन पैठि बिस्तारा।
आगे जाय लंकिनी रोका, मारेहु लात गई सुरलोका।
जाय बिभीषन को सुख दीन्हा, सीता निरखि परमपद लीन्हा।
बाग उजारि सिंधु महँ बोरा, अति आतुर जमकातर तोरा।
अछयकुमार मारि संहारा, लूम लपेटि लंक को जारा।
लाह समान लंक जरि गई, जय जय धुनि सुरपुर नभ भई।
अब बिलम्ब केहि कारन स्वामी, कृपा करहु उर अन्तरजामी।

जय जय लखन प्रान के दाता, आतुर ह्वै दुख करहु निपाता।
जय हनुमान जयति बल सागर, सुर समूह समरथ भट नागर।
ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले, बैरिहि मारु वज्र की कीले।
ॐ हीं हीं हीं हनुमन्त कपीसा, ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा।
जय अंजनिकुमार बलवन्ता, संकर सुवन बीर हनुमंता।
बदन कराल काल कुल घालक, राम सहाय सदा प्रतिपालक।
भूत प्रेत पिसाच निसाचर, अगनि बेताल काल मारी मर।
इन्हैं मारु तोहि सपथ राम की, राखु नाथ मरजाद नाम की।
सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै, रामदूत धरु मारु धाइ कै।
जय जय जय हनुमंत अगाधा, दुख पावत जन केहि अपराधा।
पूजा जप तप नेम अचारा, नहिं जानत कछु दास तुम्हारा।
बन उपबन मग गिरि गृह माहीं, तुम्हरे बल हौं डरपत नाहीं।
जनकसुता हरि दास कहावौ, ताकी सपथ बिलम्ब न लावौ।

जय जय जय धुनि होत अकासा, सुमिरत होय दुसह दुख नासा।
चरन पकरि कर जोरि मनावौं, यहि औसर अब केहि गोहरावौं।
उठ उठ चलु तोहिं राम दोहाई, पायँ परौं कर जोरि मनाई।
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता, ॐ हनु हनु हनु हनु हनु हनुमंता।
ॐ हं हं हाक देत कपि चंचल, ॐ सं सं सहमि पराने खल दल।
अपने जन को तुरत उबारौ, सुमिरत होय अनंद हमारौ।
यह बजरंग बाण जेहि मारै, ताहि कहौ फिरि कवन उबारै।
पाठ करै बजरंग बाण की, हनुमत रच्छा करै प्रान की।
यह बजरंग बाण जो जापैं, तासों भूत प्रेत सब काँपैं।
धूप देय जो जपै हमेसा, ताके तन नहिं रहै कलेसा।
उर प्रतीति दृढ़ सरन ह्वै, पाठ करै धरि ध्यान।
बाधा सब हर करै, सब काम सफल हनुमान॥

——:o:——

स्तुति

मंगल मूरति मारुतिनन्दन, सकल अमंगल मूल निकन्दन।
पवनतनय सन्तन हितकारी, हृदय बिराजत अवध बिहारी।
मातु पिता गुरु गणपति शारद, शिवा समेतु शम्भु सुख नारद।
चरन बन्दि बिनवउँ सब काहू, देहु रामपद नेह निबाहू।
बन्दहुँ राम लखन वैदेही, जे तुलसी के परम सनेही।

रामलखन कौसिक सहित, सुमिरहु करहु प्रयान।
लच्छ लाहु लै जगत जस, मंगल सगुन प्रमान।

हमारे धार्मिक प्रकाशन

सुखसागर	छप रही है।
भक्तमाल भाषा अर्थात् भक्तकल्पद्रुम लेखक—श्री प्रतापसिंह	छप रही है।
शिवपुराण-भाषा ग्यारह खंडों में	छप रही है।
रामायण तुलसीदास कृत टीका पं० सूर्यदीन शुक्ल	छप रही है।
महाभारत भाषा	१०५)
रामायण तु० कृ० टीका पं० लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज सचित्र सजिल्द	१३५)
भक्तमाल नाभाजी सटीक बड़ी सजिल्द	छप रही है।
भक्तिसागर चरणदास	६६)
योगवाशिष्ठ संपूर्ण दो भागों में	३००)
विश्राम सागर सटीक सचित्र सजिल्द	१२०)
अनुराग सागर	१२)
अष्टावक्र गीता सटीक	३०)
चाणक्य नीतिदर्पण	९)
चित्रकूट माहात्म्य	४)५० पैसे
प्रेम सागर सजिल्द	५१)
हनुमानचालीसा	३)
स्त्रीसुबोधिनी	६०)
सुन्दर विलास	९)
सुन्दर कांड गुटका	छप रही है।
हनुमन्त बावनी	)६० पैसे
हरितालिका	३)
भगवद्गीता भाषा सजिल्द	१५)
वैराग्य संदीपिनी	१)
शिव चालिसा	१)५० पैसे
शतपंच चौपाई	२)
शिव सिंह सरोज	५६)